<u>भारतीय मानक ब्यूरो</u>

“आपूर्ति श्रृंखला में जोखिम प्रबंधन”’ विषय पर प्रबंध पद्धति विभाग (बीआई एस) द्‍वारा आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय मानक ब्यूरो , भारत का राष्ट्रीय मानकीकरण निकाय होने के नाते 1946 से ही मानकों के निर्धारण में अपनी आदेशात्मक भूमिका निभा रहा है ।

प्रबंधन और पद्धति विभागीय परिषद(एमएसडीसी) के अंतर्गत गठित प्रबंधन और उत्पादकता विषय समिति (एमएसडी 04) को प्रबंधन के क्षेत्र में राष्ट्रीय मानकों के निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी गई है जिसमें संगठन, प्रचालन, आपूर्ति श्रृंखला, प्रोद्‍योगिकी, जोखिम, परियोजना, कार्यालय पोर्टफोलियो , विपणन, वेल्यू इंजीनियरिंग, रिवर्स इंजीनियरिंग शामिल है ताकि इसकी जानकारी का प्रसार किया जा सके और इसके अनुप्रयोग को प्रोत्साहित किया जा सके।

आजकल बहुत से उद्‍योगों , सेवाओं और समाज में जोखिम प्रबंधन के कार्यान्वयन को लेकर बहुत प्रबलता और उत्साह है । जोखिम प्रबंधन से ऐसी उच्च अपेक्षाऐं है कि यह निष्पादन के उच्च स्तर पाने का उचित ढांचा है । हम समुचित अवधारणा और औजारों को स्थापित करने के लिए कई उपाय देखते हैं। हालांकि जोखिम प्रबंधन की शाखा नई है और यहां कई कठिन मुद्दे और चुनौतियां है । ये विशेषतः जोखिम विश्लेषण के आधार और प्रयोग से जुडे हैं, जोखिम को कैसे व्यक्त करे, अनिश्चितताओं का कैसे निर्वाह करें और निर्णय लेने के संबंध में जोखिम विश्लेषण का प्रयोग करें। अतः प्रबंध पद्धति विभाग ने जोखिम विश्लेषण और जोखिम प्रबंधन की अवधारणाओं और सिद्धांतो के बारे में जागरुकता पैदा करने के लिए “ आपूर्ति श्रंखला में जोखिम प्रबंधन” पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया है ।

श्री वर्गीज जॉय उपमहानिदेशक (बीआईस) ने संगोष्ठी का उद्‍घाटन किया और राष्ट्रीय महत्व के विषय पर संगोष्ठी आयोजित करने की पहल पर भारतीय मानक ब्यूरो की सराहना की। अपने उद्‍घाटन भाषण में उन्होंने प्रतिभागियों के साथ जोखिम प्रबंधन के बारे में अपने

विचार/दृष्टिकोण साझा किये। उन्होंने यह सुझाव दिया कि जोखिम प्रबंधन मानकों में जोखिम के मापन के लिए मैथमैटिकल मॉडलों को शामिल करने की संभावनाओं को और खोजना चाहिए।

श्री वी. के जैन ,भारतीय मैटीरियल मैनेजमेंट संस्थान (आईआईएमएम) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बीआईएस की प्रबंधन और उत्पादकता विषय समिति के अध्यक्ष ने अपने मुख्य भाषण में संगोष्ठी के कार्यक्रम उद्देश्यों की चर्चा की और विश्व में जोखिम प्रबंधन के वर्तमान परिदृश्य के बारे में जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को बताया कि जीएसटी के कार्यान्वयन का महत्वपूर्ण प्रभाव होगा और वर्तमान कर शासन की तुलना में व्यापार के तरीकों को भी बदल दिया है । सभी वस्तुओं और सेवाओं पर एक ही कर होने से सभी वर्गों में महत्वपूर्ण पुनः वितरण होगा जिसके परिणामस्वरुप विनिर्मित वस्तुओं पर कर घटेंगे और उसका प्रभाव उत्पाद के मूल्य पर पडेगा।तथापि, लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला में बडा बदलाव आएगा; सोर्सिंग , वितरण, और वेयरहाउसिंग निर्णय जो कि वर्तमान में इस प्रकार नियोजित किए जाते हैं कि प्रचालन कुशलता की बजाय वह राज्य स्तर के कर बचाव की प्रणाली पर आधारित हो, उन्हें इस तरह पुनर्गठित किया जाएगा कि व्यापार से संबंधित पैमाने , अवस्थिति और दूसरे कारकों की कुशलता पर अनुकूल प्रभाव पडेगा। उन्होंने इस क्षेत्र के स्टेकहोल्डरों की भूमिका और उत्तरदायित्व पर ध्यान दिया।उन्होने पुनः कुशल आपूर्ति श्रंखला जोखिम प्रबंधन हेतु तकनीकी, लचीली, पारदर्शी और उत्तरदायी आपूर्ति श्रृंखला पर बल दिया।

श्रीमती स्नेह लता, प्रमुख (प्रबंध पद्धति विभाग), भारतीय मानक ब्यूरो ने अपने स्वागत भाषण में प्रतिभागियों को जोखिम प्रबंधन की अवधारणा अर्थात् “जोखिम की अवधारणा मानव जाति के समान प्राचीन है”, के बारे में अवगत कराया। यद्यपि, अत्याधुनिक समय में जोखिम की भूमिका उल्लेखनीय रूप से सामने आई है। जोखिम के अस्तित्व के लिए अनिश्चितता एक पूर्वापेक्षा होती है, अर्थात् भविष्य निर्धारित नहीं होता है, परन्तु यह मानव की वर्तमान गतिविधियों पर निर्भर होता है। सभी व्यवसायिक एवं गैर-लाभकारी संस्थाएं अप्रत्याशित घटनाओं, जैसे प्राकृतिक आपदा, चोरी के होने से धन की हानि, कर्मचारियों , ग्राहकों, या उनके परिसर में आने वाले आगंतुकों को चोट के जोखिम का सामना कराता हैं, जिसमें प्रचालन प्रभावित हो सकता है। इन घटनाओं से किसी संगठन का धन व्यय हो सकता है या संगठन स्थायी रूप से बंद भी हो सकता सकता है। तथापि, जोखिम प्रबंधन योजना से कोई भी अप्रत्याशित घटना का सामना करने की तैयारी कर सकता है, और ऐसा होने से पहले जोखिमों तथा अतिरिक्त लागतों को कम कर सकता है। किसी भी संभावित जोखिम या घटना से पहले उन पर विचार करके, और जोखिम प्रबंधन योजना

बनाकर, अपना पैसा बचा सकता है तथा अपने संगठन के भविष्य की रक्षा कर सकता है। उन्होंने आगे चर्चा में बताया कि बीआईएस द्वारा उठाई गई इस पहल का उद्देश्य जोखिम प्रबंधन की बेहतर समझ पर ध्यान केंद्रित करना है। उन्होंने सभी स्टेकहोल्डर से तकनीकी सत्रों में विचार-विमर्श में सक्रिय रूप से भाग लेने के का आग्रह किया।

इस संगोष्ठी के तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्री वी.के. जैन द्वारा की गई। तकनीकी सत्र को आगे चार भागों में बांटा गया। इस क्षेत्र के प्रतिष्ठित संगठनों जैसे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैटीरियल मैनेजमेंट (आईआईएमएम), इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फाइनेंस, इंफोसिस बीपीओ लिमिटेड, बजाज प्रोसेस पैक लिमिटेड जैसे इस क्षेत्र के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों ने अपने प्रजेंटेशन दिए। उन्होंने विशेष रूप से आपूर्ति विभिन्न मानकों के लिए आवश्यकता और महत्व पर प्रकाश डाला। इन प्रस्तुतियों में कवर किए गए और संबद्ध वक्ताओं के विवरण नीचे तालिका में दिए गए हैं:

आ पूर्ति श्रृंखला में उभरती वैश्विक प्रवृत्तियाँ	**श्री वी.के. जैन** राष्ट्रीय अध्यक्ष, आईआईएमएम तथा अध्यक्ष, एमएसडी 4
जोखिम प्रबंधन - व्यावहारिक दृष्टिकोण	**श्री प्रेम नाथ पांडे** आपूर्ति श्रृंखला सलाहकार, बजाज प्रोसेस पैक लिमिटेड, नोएडा
जोखिम प्रबंधन - आईएसओ 31000 - मानक पर अद्यतन स्थिति	**श्री राजीव थईकात** हेड, रिस्क मैनेजमेंट इन्फोसिस बीपीओ लिमिटेड
आपूर्ति श्रृंखला पर जीएसटी का प्रभाव	**प्रो अमन अग्रवाल** भारतीय वित्त संस्थान

तकनीकी सत्र के बाद सत्राध्यक्षों के बीच वार्तालाप हए, और विशेषज्ञों द्वारा की गई प्रस्तुतियों पर प्रतिभागियों तथा वक्ताओं के बीच चर्चा हुई। अनेक प्रश्न पूछे गए और संबंधित विशेषज्ञ द्वारा समुचित रूप से उनका समाधान किया गया।

इसके बाद श्रीमती शिखा राणा, वैज्ञानिक 'सी', बीआईएस के प्रबंध पद्धति विभाग द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया गया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि श्री वी के जैन के मार्गदर्शन में समिति निश्चित रूप से जोखिम प्रबंधन के क्षेत्र में मानकों को तैयार करने में प्रगति करेगी।

सरकार, उपभोक्ता, उद्योग और शिक्षाविदों जैसे विभिन्न स्टेकहोल्डरों का प्रतिनिधित्व करने वाले 40 प्रतिनिधियों ने इस संगोष्ठी में सक्रिय रूप से भाग लिया। यह संगोष्ठी वैश्विक परिदृश्य में प्रमुख रूप से जोखिम प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे जोखिम प्रबंधन मानक आईएसओ-31000 की अद्यतन स्थिति और आपूर्ति श्रृंखला पर जीएसटी का प्रभाव पर केंद्रित रही।

इस संगोष्ठी ने जागरूकता बढ़ाने के अपने उद्देश्य को हासिल किया, जोकि जोखिम प्रबंधन के लिए एक प्रणाली-आधारित, बुनियादी ढांचा की अनिश्चिंतता को प्रबंधित करने के लिए आवश्यक है जिससे उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके और मूल्यों का सृजन व सुरक्षा हासिल की जा सके । संगोष्ठी ने निष्कर्ष निकाला कि जोखिम प्रबंधन एक सतत् प्रक्रिया है, और इसे न केवल परियोजना की शुरुआत में ही किया जाना चाहिए, अपितु परियोजना के संपूर्ण जीवनकाल में इसे लगातार जारी रहना चाहिए।

Bureau of Indian Standards

NATIONAL SEMINAR ON

"Risk management in Supply Chain"

Organized by

Management Systems Department (BIS); 30 August 2017

Bureau of Indian Standards (BIS) being the National Standards Body of India has been playing its mandated role in formulation of Indian Standards since 1946.

Management and Productivity Sectional Committee, MSD 04, constituted under Management and Systems Division Council (MSDC) is entrusted with the development of National Standards in the field of Management including Organization, Operations, Supply Chain, Technology, Risk, Project, Programme, Portfolio, marketing, Value Engineering, reverse engineering with a view to disseminate its knowledge and promote its application.

There is an enormous drive and enthusiasm in various industries, services and society as a whole nowadays to implement risk management in the organizations. There are high expectations, that risk management is the proper framework for obtaining high levels of performance. We see a lot of initiatives to establish adequate concepts and tools. However, the risk management discipline is young, and there are many difficult issues and challenges. These relate in particular to the foundation and use of risk analysis; how to express risk, how to handle uncertainties, and how to use risk analysis in a decision-making context. Hence to to create awareness about key concepts and principles of risk analysis as well as risk management, Management and Systems Department organized a National Seminar on "**Risk management in Supply Chain**".

Shri Varghese Joy, Deputy Director General (BIS) inaugurated the Seminar and complimented Bureau of Indian Standards for taking the initiative to organize the seminar on theme of National importance. In his inaugural address he shared his perspective/ viewpoint about Risk Management with the participants. He further suggested that the possibility of including mathematical models to measure risk in the Risk Management Standards may be explored.

Shri V. K. Jain, National President, Indian Institute of Material Management (IIMM) and Chairman of the Management and Productivity Sectional Committee of BIS in his key note address deliberated upon the programme objectives of the seminar and updated upon the current scenario of Risk Management across the globe. He enlightened all participants with the fact that Implementation of GST will have significant impact and will change the manner in which business is carried out in comparison with the ways of the current tax regime. With a single rate being applied to all goods and services there will be a significant redistribution of taxes across all categories resulting in reduction in taxes on manufactured goods hence impacting the pricing of the product. Logistics and supply chains will therefore see a major

change; sourcing, distribution and warehousing decisions which are currently planned based on state level tax avoidance mechanisms instead of operational efficiencies will be reorganized to leverage efficiencies of scale, location and other factors relevant to the business. He focused upon the roles and responsibilities of different stakeholders in this arena. He reiterated the importance of technology, flexible, transparent and responsible supply chain for efficient Supply Chain Risk Management.

Smt. Sneh Lata, Head (Management Systems Department), BIS in her welcome address briefed the participants about concept of Risk Management i.e. “The concept of risk is as old as mankind”, yet arguably the role of risk became significantly more prominent in late modernity. A prerequisite for the existence of risk is uncertainty, i.e. that future is not predetermined but is dependent on present human activities. All businesses and non-profit organizations face the risk of unexpected events, such as a natural disaster, loss of funds through theft, or injury to staff, customers, or visitors on your premises that could impact operations. Any of these events can cost organization money or cause the organization to permanently close. However, with a risk management plan, one can prepare for the unexpected, minimizing risks and extra costs before they happen. By considering potential risks or events before they happen and having a risk management plan in place, one can save money and protect their organization’s future. She further deliberated that this initiative taken by BIS aims to focus upon better understanding of Risk Management. She urged all the stakeholders to participate actively in the deliberations in the technical sessions.

The technical session of the Seminar was chaired by Shri V. K. Jain. Technical session was further split into four presentations. The presentations made by eminent experts from this sector representing esteemed organizations such as Indian Institute of Material Management (IIMM) , Indian Institute of Finance, Infosys BPO Ltd., Bajaj Process Pack Ltd., who highlighted the need and importance for standards in various aspects of Risk Management especially Supply Chain. Topics covered in the presentations and the corresponding speakers are tabulated below.

Global upcoming trends in Supply Chain	**Mr. V. K. Jain** National President, IIMM and Chairman, MSD 4
Risk Management – Practical Approach	**Mr. Prem Nath Pandey** Supply chain Consultant , Bajaj Process Pack Ltd., NOIDA
Risk Management -Update on the Standard – ISO 31000	**Mr. Rajeev Thykatt** Head, Risk Management Infosys BPO Ltd.
Impact of GST on the Supply Chain	**Prof. Aman Agarwal** Indian Institute of Finance

The technical session was followed by an interaction between session-chair, speakers and the participants deliberating on the presentations made by the experts. Queries were raised and were appropriately resolved by the concerned expert.

It was further followed by hearty vote of thanks proposed by Smt Shikha Rana, Scientist 'C', Management and Systems Department of BIS. She further expressed confidence that under guidance of Shri V. K. Jain the committee shall surely dynamically progress in formulating standards in field of Risk Management.

Around 40 delegates representing different stakeholder’s category like Govt., Consumer, Industry and Academicians actively participated in this seminar. The seminar focused on various facets of risk management primarily on Global Scenario, update on Risk management Standard ISO 31000 and Impact of GST on the Supply Chain.

The Seminar achieved its objective of raising awareness that for risk management a systems-based, structured framework is required for managing uncertainties supporting attainment of objectives and the creation and protection of value. The Seminar concluded by highlighting that Risk management is a continuous process and as such must not only be done at the very beginning of the project, but continuously throughout the life of the project.

“आपूर्ति श्रृंखला में जोखिम प्रबंधन”
पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
NATIONAL SEMINAR ON
“Risk Management in Supply chain”
PREM NATH PANDEY
PROF. A. AGARWAL
V.K. JAIN
RAJEEV THYKATT

“आपूर्ति श्रृंखला में जोखिम प्रबंधन”
पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
NATIONAL SEMINAR ON
“Risk Management in Supply chain”